आईआईएफएम में बना बायोगैस प्लांट, महीने में एक एलपीजी सिलेंडर का खर्च घटा

नहीं होने देते खाने की वेस्टेज

भोपाल। इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ फॉरेस्ट मैनेजमेंट (आईआईएफएम) ने एक ऐसा प्रयोग किया है, जिससे न सिर्फ एलपीजी पर निर्भरता कम हुई, बल्कि स्टूडेंट्स मैस से निकलने वाला वेस्ट भी 100 प्रतिशत उपयोग किया जाने लगा है। आईआईएफएम के स्टूडेंट्स मैस में एक बायोगैस प्लांट लगाया गया है। यह पूरी तरह से क्लीन-एंड-ग्रीन प्लांट है। इसके उपयोग से महीनेभर में एक सिलेंडर एलपीजी का खर्च घट गया है। कॉलेज के स्टूडेंट्स का लंच और डिनर बायोगैस स्टोव पर ही पकाए जा रहे हैं।

बायोगैस स्टोव पर लंच-डिनर कुकिंग

चेन्नई में 'ग्रीन कनेक्ट' नाम की संस्था चला रहे एंटरप्रिन्योर चैतन्यम् आईआईएफएम के साथ बातचीत के बाद यहां आए। कुछ जरूरी मेजरमेंट्स लेकर उन्होंने जरूरत के हिसाब से बायोगैस प्लांट तैयार किया। प्लांट में ग्राइंडर लगा हुआ है, जिसमें वेस्ट और मैस का वेजिटेबल कट डाला जाता है। ग्राइंडर से वेस्ट के बारीक टुकड़े होते हैं। फिर पानी के साथ यह बड़े टैंक में चला जाता है। सुबह डाले गए वेस्ट से शाम को खाना तैयार करने के लिए रोजाना 3-4 किलो गैस तैयार हो जाती है। वहीं, शाम को डाले गए वेस्ट से प्रोड्यूस गैस सुबह काम आती है। फिलहाल कैंपस में लंच और डिनर आइटम्स की कुकिंग बायोगैस स्टोव पर ही हो रही है।

• आईआईएफएम कैंपस में बना बायोगैस प्लांट।

2.75 लाख में बनी ईकोफ्रेंडली मैस

आईआईएफएम में प्रोफेसर डॉ. योगेश दुबे ने बताया, फिलहाल कॉलेज में 250 स्टूडेंट्स हैं, जिनके लिए मैस में ही खाना तैयार होता है। अब तक मैस से निकलने वाले वेजिटेबल कट और अन्य वेस्ट ट्रेडीशनल तरीके से ही डिस्पोज करते थे। फिर सोचा कि क्यों न इस वेस्ट को एक अपॉर्च्युनिटी की तरह इस्तेमाल किया जाएगा। कॉलेज की एक्सपर्ट टीम ने देशभर का जायजा लिया कि वेजिटेबल वेस्ट का सही इस्तेमाल किस-किस तरह से किया जा सकता है। रिसर्च के दौरान चेन्नई के एंटरप्रिन्योर चैतन्यम् से मुलाकात हुई। उन्होंने संस्थान के लिए बायोगैस प्लांट तैयार किया। प्लांट लगाने में 2.75 लाख रुपए का खर्च आया। 50 किलो की कैपेसिटी वाला प्लांट जिस तरह बायोगैस प्रोड्यूस और एलपीसी सिलेंडर का खर्च कम कर रहा है, उससे जल्द ही यह लागत वसूल भी हो जाएगी।

बायोगैस प्लांट के तीन बड़े फायदे

प्लांट से एक हफ्ते में एक सिलेंडर गैस प्रोड्यूस होने से मैस की एलपीजी पर निर्भरता काफी कम हो गई है। वेस्ट डिस्पोजल की प्रॉब्लम का भी एक अच्छा हल मिल गया है। खास बात यह है कि बायोगैस प्लांस से निकलने वाली स्लरी (लिक्विड बायप्रोडक्ट) भी काफी काम की है। इसे पानी के साथ एक चौथाई के अनुपात में मिलाकर आईआईएफएम का हॉर्टीकल्चर डिपार्टमेंट खाद की तरह इस्तेमाल कर रहा है। गंध रहित यह स्लरी पौधों के लिए बहुत पोषक है।

वेस्ट डिस्पोजल का बेहतर हल

हमारे लिए फूड वेस्ट डिस्पोजल एक बड़ी प्रॉब्लम थी। बायोगैस प्लांट बेहतर सॉल्यूशन है। इसमें कैंटीन और फैकल्टी एरिया का वेस्ट फूड भी डिस्पोज हो रहा है।

-डॉ. जीए किन्हाल, डायरेक्टर, आईआईएफएम

Nav Dunia, October 23, 2015